JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समकालीन कला में सामाजिक जन–जीवन के चित्रण का प्रकटीकरण

(Samkaleen Kala mein Samajik Jan-Jeevan Ke chitran ka Prakatikaran)

प्रो. अर्चना रानी (Prof. Archana Rani)
विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर, ड्राइंग एवं पेण्टिंग विभाग, रघुनाथ गर्ल्स (पीजी) कॉलिज, मेरठ–250001
पता : 25, मुरारीपुरम्, विपरीत गढ़ बस स्टैण्ड, मेरठ–250002

ललिता उपाध्याय (Lalita Upadyay)
शोध छात्राः ड्राइंग एवं एवं पेण्टिंग विभाग, रघुनाथ गर्ल्स (पीजी) कॉलिज, मेरठ।
फोन . 8630130502

सारांशः– समकालीन कला जो आज के प्रवर्तन की सूचक है। वह समकालीन कला नवीन परिवर्तन की प्रवृत्ति की ओर संकेत करती है जिसमें कलाकार नये प्रयोगों के साथ नवीन अभिव्यक्ति को जन्म देते हैं। समकालीन कला आज के युग में प्रचलित कला की सूचक है जिसमें कलाकारों की कला को बढावा देने में भारत सरकार द्वारा गठित राष्ट्रीय ललित कला अकादमी ने अपनी अहम भूमिका निभाई है जिसका उददेश्य सभी प्रकार की कला जैसे– चित्रकला, मूर्तिकला, छापाकला आदि अन्य कलाओं को आगे बढाना है। आज का कलाकार विभिन्न विषयों को लेकर कलाकृतियों का निर्माण कर रहा है। कोई सामाजिक जन–जीवन से प्रभावित है, तो कोई राजनैतिक विषयों एवं अमूर्त कला को महत्व देना जरूरी समझता है। समकालीन कला के अंतर्गत सामाजिक जन–जीवन पर चर्चा करें तो बहुत से कलाकारों ने इस विषय पर सृजन कार्य किया है। कलाकार नित नवीन प्रयोगों में लगा हुआ है एवं अपने–अपने माध्यम से कला का सृजन कर रहा है।

प्रस्तुत शोध पत्र में अमृता शेरगिल, लक्ष्मण पई, अर्पणा कौर, अंजलि इला मेनन एवं अर्पिता सिंह जैसे विश्व विख्यात कलाकारों की कला की अभिव्यक्ति पर प्रकाश डाला गया है। उपरोक्त सभी कलाकारों का सृजन के क्षेत्र में महान वर्चस्व के स्वामी हैं, जिन्होनें भारतीय समकालीन कला में सामाजिक जन–जीवन विषय को चुनकर समाज में अपनी अभिव्यक्ति की उपस्थिति दर्ज करायी है। आगामी आने वाले नवीन कलाकारों ने उपरोक्त सभी कलाकारों से प्रेरणा लेकर समकालीन कला में सामाजिक जनजीवन पर चित्रण कार्य को नये रूप में सभी के समक्ष प्रस्तुत किया है।

शब्द–संकेतः– समकालीन कला, कलाकार, अभिव्यक्ति, समाज, दैनिक कार्य, महिलायें, प्रदर्शनी ।

प्रस्तावनाः– भारत में समकालीन कला का आगमन बींसवी शताब्दी के आरम्भ में परिवर्तित सांस्कृतिक परम्पराओं के बीच हुआ। 1850 के दशक में भारत में संगठित तौर तरीके से पश्चिमी कला का अध्ययन कराने के लिए कई स्थानों जैसे बम्बई, मद्रास, कलकत्ता में कला विद्यालयों की स्थापना की गयी। जिसका गहरा प्रभाव भारतीय कला पर पड़ा और धीरे–धीरे भारतीय कला का अन्त होने लगा। तभी कुछ कलाकारों के सहयोग से भारतीय कला को नयी दिशा मिली और उन्होनें पश्चिमी कला की नकल

न करके अपनी आत्मिक अभिव्यक्ति को सृजित करना आरम्भ कर दिया। आज अमूर्त चित्रण समकालीन कला के रुप में लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। नवीन कलाकार नित नये प्रयोंगो को सृजित कर रहे हैं जिसमें वह विभिन्न प्रकार के विषयों जैसे– सामाजिक जन–जीवन से सम्बन्धित विषयों, समाज में महिलाओं की दशा, हिंसा की यथार्थता को अपनी कला के द्वारा सृजित कर रहे हैं।

शोध–पत्र का उददेश्य :– आज समकालीन कला विभिन्न रूपों में सभी के समक्ष प्रस्तुत है। समकालीन कला के अन्तर्गत ज्यादातर कलाकार सामाजिक जन–जीवन से सम्बन्धित समस्याओं को चित्रण के माध्यम से प्रकट कर रहे हैं। सामाजिक जन–जीवन के चित्रण की दशाओं के प्रकटीकरण में सर्वप्रथम अमृता शेरगिल का नाम अग्रणीय है। उन्होनें तूलिका एवं रंगों की सहायता से भारत के निम्नवर्गीय जनता का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। इसी क्रम में कलाकार लक्ष्मण पई ने अपनी जन्मभूमि गोवा के सामाजिक जन–जीवन एवं प्रकृति को चित्रण के माध्यम से सृजित किया है। अर्पिता सिंह ने नारी जीवन की दैनिक दिनचर्या का अतियथार्थवादी चित्रण किया है। अंजलि इला मेनन की कला पर अमृता शेरगिल के चित्रों का प्रभाव रहा है। अन्त में अर्पणा कौर के सृजन के विषय पर चर्चा करें तो उनकी कला समाज में स्त्रियों की दशा एवं समाज में बढ़ती हिंसा को दर्शाती है। अतः उपरोक्त भारतीय समकालीन कलाकारों की सृजन शक्ति में सामाजिक जन–जीवन के चित्रण के विषय में विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान करना ही प्रस्तुत शोध पत्र का उददे्श्य है।

शोध–पत्र का साहित्यिक सर्वेक्षणः– प्रस्तुत शोध पत्र के प्रकाशन हेतु जिन पुस्तकों का विस्तारपूर्वक अवलोकन किया गया है उनमें प्राणनाथ मागो की पुस्तक ''भारत की समकालीन कला– एक परिपेक्ष्य'' (स0 –2006, भारत पुस्तक विन्यास) प्रमुख है। इस पुस्तक में भारतीय समकालीन कला एवं कलाकारों के सृजन के विषय में विस्तार से जानकारी दी गयी है। इसके अतिरिक्त र0 वि0 साखलकर की पुस्तक ''आधुनिक चित्रकला का इतिहास'' (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2010), डा0 गिर्राज किशोर अग्रवाल की पुस्तक ''भारतीय चित्रकला का इतिहास'' (संजय पब्लिकेशन्स), डा0 ममता चतुर्वेदी की पुस्तक ''समकालीन भारतीय कला '' (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2022), आदि पुस्तकों का सहयोग लिया गया है।

शोध–पत्र का क्षेत्र एवं महत्वः– प्रस्तुत शोध पत्र में जिन कलाकारों ने भारतीय समकालीन कला के अंतर्गत सामाजिक जन–जीवन का यथार्थ चित्रण किया है, उन कलाकारों के सृजन के विषय में विस्तार–पूर्वक चर्चा की गयी है। सभी कलाकार भारतीय कला के सृजन के क्षेत्र में अपना विशेष स्थान रखते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से अमृता शेरगिल के सामाजिक जन–जीवन से सम्बन्धित चित्रों की यर्थाथता से परिचित होगें। इसी क्रम में लक्ष्मण पई के प्रकृति एवं समाज के तालमेल को चित्रों के माध्यम से देख सकतें हैं। अर्पिता सिंह के चित्रों में ज्यादातर महिलाओं की रोजमर्रा के कामों में व्यस्तता को दर्शाया गया है। अंजलि इला मेनन ने एम0 एफ0 हुसैन एवं अमृता शेरगिल की कला से प्रभावित होकर चित्रण कार्य किया है एवं अर्पणा कौर ने समाज में होने वाली हिंसा, नारी दशा की यथार्थता को चित्रों के माध्यम से प्रकट किया है। प्रस्तुत शोध में उपरोक्त समस्त भारतीय समकालीन कलाकारों की सृजनात्मकता वर्णन का विषय है।

शोध–पत्र की लेखन प्रक्रियाः– प्रस्तुत शोध पत्र लेखन में शोध के सभी मानकों को ध्यान में रखते हुए पूर्ण रुप दिया गया है। भारतीय समकालीन कलाकारों की सामाजिक जन–जीवन से सम्बन्धित सृजन–शक्ति को शोधपत्र में भारतीय समकालीन कला का परिचय देते हुए उसके विकास एवं चित्रण विषय पर प्रकाश डाला गया है। तदुपरान्त अमृता शेरगिल, लक्ष्मण पई, अर्पिता

सिंह, अंजलि इला मेनन, एवं अर्पणा कौर के सृजन के विषय में चर्चा करते हुए उनके सृजन की यथार्थता से परिचित होते हुए अन्त में शोध–पत्र का सार निष्कर्ष स्वरुप प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय समकालीन कला का परिचय एवं विकासः– समकालीन कला शब्द आज के वर्तमान युग में मूर्त अमूर्त कला से सम्बन्ध रखता है। आज वर्तमान समय में समकालीन कला की अमूर्तता को कलाकारों द्वारा विभिन्न रुपों में सृजित किया जा रहा है। कलाकार नित नवीन प्रयोगों को चित्रण के माध्यम से सृजित कर रहा है। वर्तमान युग में कलाकार अपनी मानसिक सोच–विचार एवं भावों को तूलिका एवं रंगों की सहायता से नया रुप प्रदान कर रहा है। वैसे अगर देखा जाये तो जो कला समय के साथ–साथ नवनिर्मित हो रही है, वही समकालीन कला का वास्तविक स्वरुप है। समकालीन कला के निरन्तर विकास पर चर्चा की जाये तो सोलहवीं शताब्दी के अंतर्गत ईस्ट इण्ड़िया कम्पनी की स्थापना होने से भारत में पश्चिमी कला का आगमन हुआ जिसका बहुत गहरा प्रभाव कलाकारों के मस्तिष्क पर पड़ा और वह पश्चिमी कला की नकल करने में जुट गये। पश्चिमी कला को बढावा देने के लिए उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में भारतीय विद्यार्थियों को पश्चिमी या यूरोपीय कला में प्रशिक्षित करने के विचार से मद्रास(1850), कलकत्ता (1854), बम्बई(1857) एवं लाहौर(1857) में कला विद्यालय खोले गये, वहाँ नैसर्गिकतावादी पद्धति से चित्रण करने वाले इंगलिंश कलाकारों की निर्देशक के रुप में नियुक्ति की गई जिसके द्वारा भारतीय कलाकारों को भ्रमित किया गया और भारतीय कला की ओर भारतीय कलाकारों का सृजन का मार्ग भटक गया। इसी कलकत्ता कला विद्यालय के प्रधानाचार्य ई0 वी0 हैवेल एवं बंगाल स्कूल के आरम्भकर्ता श्री अवनीन्द्र नाथ टैगोर के सहयोग से भारतीय कला में नयी चेतना जाग्रत हुई। उन दोनों के विचारों से भारतीय कला विद्यार्थियों को चाहिये कि वे पाश्चात्य कला का अंधानुकरण करने के बजाये अपनी परम्परागत प्राचीन शैलियों– अंजता, राजपूत, मुगल को आदर्श मानकर उनका अध्ययन करके समकालीन विषयों का चित्रण करें, जिससे उनकी कला में स्वाभाविकता के साथ–साथ भारतीय जीवन दर्शन की सत्य अनुभूति प्रकट हो सकती है।

बंगाल स्कूल से जुडे कलाकारों ने दूर–दूर देश–विदेशों में भारतीय कला का प्रचार–प्रसार किया। इसी बीच अमृता शेरगिल के चित्रों की प्रर्दशनी ने कला के क्षेत्र में एक नये अध्याय की शुरुआत की। उन्होनें भारतीय कला के माध्यम से सामाजिक जन–जीवन का ऐसा यथार्थवादी चित्रण किया, जिसको देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गये और यही से भारतीय कला ने नया मोड लिया एवं वह प्रगति के नवीन मार्ग पर चल पड़ी। रविन्द्रनाथ टैगोर की कला में भारतीय वैचारिक जीवन की आध्यात्मिकता की अनुभूति है तो अमृता शेरमिल की कला में भारतीय सामाजिक जन–जीवन की निष्काम समर्पित वृत्ति का दर्शन है। इसी क्रम में गगनेन्द्रनाथ ने घनवादी चित्रों को सृजित कर कला के नवीनरुप का सृजन किया। आगे चलकर यामिनी राय ने लोककला से प्रभावित होकर स्वतन्त्र रुप से चित्रों का निर्माण किया। रशियन कलाकार निकोलस रोरिक ने भारत की संस्कृति एवं हिमालय के सौन्दर्य से विलुप्त होते हुए हिमालय के अंसख्य चित्रों का सृजन कर डाला, जिनसे उन्हें आत्मिक शान्ति प्राप्त करने का मार्ग मिला। आगे चलकर युवा कलाकारों ने कला के क्षेत्र में निरन्तर नये–नये प्रयोग करना आरम्भ कर दिया एवं कला का स्वरुप अमूर्त रुप में बदल गया जो समय के साथ कला के रुप में विकसित हुई। समकालीन कला के अंतर्गत कलाकार अपने विचारों को स्वतन्त्र रुप से अभिव्यक्त करने लगें। आज के वर्तमान समय में कलाकारों की मानसिक अभिव्यक्ति अलग–अलग विषयों को चित्रित कर रही है, कोई सामाजिक मुददो को यथार्थ रुप में चित्रित कर रहा है तो कोई प्रकृतिक विषयों को सृजित करने का कार्य कलाकार अपनी स्वेच्छा से कर रहा है। फोटोग्राफी एवं कम्प्यूटर के आगमन से कला का स्वरूप बिल्कुल बदल गया है। युग कलाकार कला के क्षेत्र में नवीन प्रयोंग कर रहा है। आज के वर्तमान युग में समकालीन कला के अंतर्गत सामाजिक मुददों को यथार्थ रूप में सृजित किया जा रहा है। अतः हम अपने इस शोध पत्र के अंतर्गत कुछ भारतीय समकालीन कलाकारों के सामाजिक जन–जीवन पर आधारित चित्रों की सृजना शक्ति पर विस्तार से चर्चा कर रहे हैं।

अमृता शेरगिल की कला में सामाजिकताः– भारतीय और पाश्चात्य कला के बीच संतुलन स्थापित करती अमृता शेरगिल कला जगत के क्षेत्र में सदैव हीरे के समान चमकती रही हैं। बुडापेस्ट हंगरी में सन् 1913 में जन्मी अमृता शेरगिल के चित्रों की प्रर्दशनी ने भारत में कला के क्षेत्र में क्रान्ति ला दी। इनकी माता हंगेरियन महिला थी एवं पिता उमराव सिंह शेरगिल सिक्ख जागीरदार थे। उन्होंने अपने माता–पिता एवं बहन के साथ भारत में प्रवेश किया। भारत के विभिन्न स्थानों जैसे–दिल्ली, बम्बई की यात्रा करते हुए वह शिमला में घूमने के लिए पहुँची। उन्होंने पुनः पेरिस वापस लौटकर अपनी कला शिक्षा पूरी की। वह सन् 1938 में डा0 विक्टर एगन से विवाह करके पुनः भारत लौट आयी। भारत आकर उन्होंने शिमला को अपने निवास स्थान के रूप में चुना। परम्परागत भारतीय चित्रकला, भित्ती चित्रण एवं पाश्चात्य कला प्रविधियों एवं प्रवृत्तियों के मेल से उन्होनें मौलिक शैली की नीवं रखी जिसमें विषय भारतीय और शैली विदेशी उनका आधार बनी। उन्होंने कला के क्षेत्र में नये रूपाकारों को कैनवास पर उकेरकर कला जगत में अपने आप को स्थापित किया। उन्होंने भले ही भारत में जन्म न लिया हो परन्तु अपने कर्म कार्य को करने के लिए भारत भूमि का चुनाव किया ।

अमृता की कला पर विशेष रूप से पॉल गोंग्वॉ की कला का प्रभाव दिखाई पडता है। आकृतियों का समूहीकरण, उदास परिवेश, उभरी भौहें, तिर्यक नेत्र, शारीरिक घनत्व, मोटे होंठ, चौड़े पैर ये सभी विशेषताएं गोंग्वॉ के प्रभाव को प्रतिबिम्बित करती है। जिस प्रकार गोगां ने ताहिती जीवन की स्वच्छन्दता में अपने स्वभाव एवं कला रचना की अभिव्यति को खोजा उसी प्रकार अमृता ने पहाडी आँचलों में बसने वाले सीधे सरल स्वभाव वाले ग्रामीणों को आत्माभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। उन्होने भारत के गरीब, असहाय लोगों का वास्तविक चित्रण किया। उन्होनें दैनिक जन–जीवन से सम्बन्धित लोगों को अपनी तूलिका एवं रंगों के माध्यम से कैनवास पर चित्रित किया। यही से कला प्रगति के नवीन मार्ग पर अग्रसर होती चली गयी। अमृता कला के नयें–नयें प्रयोंग में निरन्तर लगी रहती थीं। उन्होंने अपने चित्रण में सरल आकृतियों को बनाया। उन्होनें भारतीय जन–जीवन के अलावा प्राकृतिक दृश्यों का भी बहुत मनमोहक रुप चित्रित किया। अमृता शेरगिल के प्रसिद्ध चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली एवं राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में संग्रहित हैं। उन्हें कई पुरस्कारों से भी नवाजा गया था। उन्हें बम्बई आर्ट सोसाइटी द्वारा पुरस्कृत किया गया। अट्ठाईस वर्ष की अल्पायु में ही स्वास्थ्य खराब होने के कारण सन् 1914 में अमृता की मृत्यु हो गयी। कला के क्षेत्र में उनके नयें प्रयोगों ने आगे आने वाले कलाकारों को नई दिशा प्रदान की।

लक्ष्मण पई की कला में सामाजिकताः– कला जगत के समकालीन कलाकार लक्ष्मण पई का जन्म सन् 1926 में गोवा के मडगॉव में हुआ। उन्होंने अपनी कला शिक्षा बम्बई के सर जे0 जे0 स्कूल ऑफ आर्ट में पूर्ण की। सन् 1943 से 1947 तक डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात् उन्हें वहीं पर अध्यापन कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। परन्तु सन् 1951 में कुछ विरोधाभास के चलते उन्होनें वहां से अध्यापन कार्य बंद कर पेरिस चले गये। उनकी पेरिस में रहने की व्यवस्था उनके मित्र एच0 एस0 रजा ने की। पेरिस में निवास के चलते उन्होनें वहां के एकोल–द–बॉक्स आर्टस से भित्ती चित्रण एवं प्रिन्ट मेंकिग की तकनीक को सीखा। लक्ष्मण पई की कला सृजन का आरम्भ तब होता है, जब सभी कलाकारों की कला पर यूरोपीय कला का बोलबाला था। अपनी कला के प्रारम्भिक सृजन में उन पर गोवा के प्राकृतिक दृश्यों का प्रभाव रहा है। उन्होंने अपने चित्रों में सूर्यास्त, पाम वृक्ष, ग्रामीण जीवन, फेनी बनाने के उद्योग आदि दृश्यों को स्याही व जलरंगों के माध्यम से कागज पर खूब अभिव्यक्त किया है। उनके प्राकृतिक चित्रों में मनमोहक सौंदर्य की अनुभूति होती है। उनके चित्रों में सौंदर्य ,लय, गति, एवं आन्नद को पूर्ण संगम के रुप में देखा जा सकता है। उन्होंने तान्त्रिक कला से प्रभावित होकर भी चित्रण कार्य किया है। लक्ष्मण पई ने जलरंग, तैल रंग, एक्रेलिक, एवं स्याही सभी माध्यमों में चित्रण कार्य किया है। लक्ष्मण पई को चित्रण कार्य करते समय संगीत सुनना बेहद पंसद था। कुमार गन्धर्व, भीमसेन जोशी, किशोरी अमोनकर आदि उनके पसंदीदा गायक रहे हैं। यही कारण है कि उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत

के विविध रागों पर भी चित्रण किया था। वह स्वंय भी सितार व बासुरी वादक रहे हैं। म्यूजिकल मूडस नामक चित्र श्रृंखला पै की संगीत रुचि का उत्कृष्ट उदाहरण है।

उन्होंने विदेशी प्रभाव से दूर रहकर भारतीय ढ़ंग से अपनी कला को विकसित किया। उनकी चित्रों में रंग योजना शास्त्रीय न होकर रोमांन्टिक है। उन्होंने भारत की अलंकृत शैली को आधुनिकता का रुप देते हुए एक नवीन शैली को प्रस्तुत किया है। उनके चित्रों में आनन्द प्रदान करने वाली सुन्दरता के दर्शन होते हैं। भारत पुनः लौटने के पश्चात् लक्ष्मण पई को सन् 1977 ई0 में गोवा के कॉलेज ऑफ आर्ट में प्राचार्य पद पर नियुक्ति का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ पर उन्होंने सन् 1987 ई0 तक अपनी सेवाऐं प्रदान की। लक्ष्मण पई को कई बार राष्ट्रीय कला पुरस्कार, ललित कला अकादमी नई दिल्ली से सम्मानित किया गया।

अर्पिता सिंह की कला में सामाजिकताः– भारतीय समकालीन कला को अपनी अभिव्यक्ति द्वारा नई दिशा प्रदान करने में महिला कलाकारों में अर्पिता सिंह का नाम प्रमुख रुप से लिया जाता है। हाँलाकि अर्पिता सिंह महिला कलाकार पुरुष कलाकार जैसा कोई अन्तर नहीं मानती थीं, उनके लिए कलाकार सिर्फ कलाकार होता है। उसे किसी लिंग में विभाजित नहीं किया जा सकता है। अर्पिता सिंह का जन्म सन 1937 में पश्चिम बँगाल के बारानगर में एक बंगाली परिवार में हुआ है किन्तु अब वर्तमान काल में उन्होंने दिल्ली को अपना निवास स्थान बनाया है। उन्होंने अपनी कला शिक्षा दिल्ली पालीटेक्नीक से पूर्ण की है। यहीं उनकी भेंट पश्चिमी कलाकार परमजीत सिंह से हुई, लम्बी मित्रता के पश्चात् अर्पिता सिंह ने उन्हें जीवनसाथी के रुप में स्वीकार किया और वह अर्पिता दत्ता से अर्पिता सिंह हो गयी। आरम्भ में अर्पिता सिंह मुख्य रूप से कागज पर जलरंग में केवल काली एवं सफेद रंग की स्याही से चित्रण कार्य करती थीं। 1980 के दशक में उन्होंने बंगाल की लोक कला से प्रभावित होकर महिलाओं को निजी एवं दैनिक कार्यों में व्यस्त चित्रित किया। उन्होंने नारी जीवन की दैनिक दिनचर्या का अतियथार्थवादी चित्रण किया। धीरे– धीरे उनके चित्रों में परिवर्तन आता गया और उनके चित्र प्रतीकात्मक तरीके के होते गये। इन चित्रों में नारी और पुरुष के लैंगिक चित्र, भूल–भुलैया सर पहने पुरुष, बन्दुक ताने सैनिक का चित्रण किया।

अपनी पढाई पूरी करने के पश्चात् अर्पिता सिंह ने दिल्ली सरकार की कपड़ा मंत्रालय में कपड़ा डिजाइनर के रूप में कार्य करना आरम्भ कर दिया। कपड़ा उद्योग का अनुभव उनके कार्य में मुख्य रुप से झलकाता है। अस्सी के दशक में उन्होंने बंगाली लोक कला का महिलाओं को केन्द्र मानकर चित्रण कार्य किया। वह अपने सृजन में मुख्य रुप से गुलाबी एवं नीले रंग का प्रयोग करती थीं। उनकी पेंटिग्स में ज्यादातर महिलाओं को रोजमर्रा के कामों में व्यस्त चित्रण किया गया है एवं अपनी सरल दिनचर्या का पालन करते हुए दिखाया गया है। नब्बें के दशक में अर्पिता सिंह जलरंगों के स्थान पर तैल रंगों को प्रयोंग में लाने लगी, किन्तु उनका सृजन महिलाओं पर ही केन्द्रित रहा। उनके चित्रों में महिलाओं की सुख–दुःख, आशा–निराशा सभी भावनाओं को स्थान मिलने लगा। धीरे–धीरे अर्पिता का सृजन निजी से सार्वजनिक होता गया और समाज में बढ़ती हिंसा, महानगरीय जीवन के विरोधाभास, राजनीतिक प्रशासनिक विसंगतियॉ आदि प्रतीकात्मक रूप में आपकी कला अभिव्यक्ति बन गये।अर्पिता सिंह को सन 2011 में भारत सरकार द्वारा कला के क्षेत्र में पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया। अर्पिता सिंह ने एक कलाकार के रुप में जीवन की समग्रता को देखा और सृजित किया है।

अंजलि इला मेनन की कला में सामाजिकताः– भारत में समकालीन कलाकारों में अंजलि इला मेनन का नाम अग्रणीय रुप में लिया जाता है। उनका जन्म सन 1940 में पश्चिम बंगाल के बुरनपुर में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा तमिलनाडु के लारेंस स्कूल, लवडेस में हुई, उसके पश्चात् उन्होंने मुम्बई के सर जे0 जे0 स्कूल ऑफ आर्ट में अध्ययन किया। तत्पश्चात् उन्होंने दिल्ली

विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में ड़िग्री हासिल की। इसी समय उनका आकर्षण पश्चिमी कलाकार मोदिग्लिआनी एवं भारतीय चित्रकार एम0एफ0 हुसैन, अम्रता शेरगिल की चित्रों की ओर गया। उन्होंने विभिन्न शैलियों को एकत्रित कर केवल अट्ठारह वर्ष की आयु में एक एकल प्रदर्शनी का आयोजन किया। अंजलि की कलाकृतियॉ प्राचीन कलाकारों की तकनीक का स्मरण कराती है जिनमें सामान्य मनोभाव, गहनता तथा अन्तराल है जो सामान्य अमूर्त कला से प्रारम्भ होकर यथार्थवाद और फिर शास्त्रीय कला तक जाती है। अंजलि इला मेनन के चित्र सरल रूप में चित्रित हैं। उनकी चित्रण शैली में नारी के विविध रुपों के दर्शन होते हैं। उनकी चित्रों की रंग योजना चमकीली एवं चटख रंगो से पूर्ण होती है। उनके व्यक्तिचित्र भी मॉड़ल से समानता रखने की अपेक्षा उसके बाहरी रंग रुपाकार को देखते हुए भी उसके पार तक देखती हैं। अंजलि इला मेनन प्रसिद्ध भित्ती चित्रकार के रुप में भी प्रसिद्ध थीं। उन्होंने अपने धार्मिक विषयों पर आधारित चित्रों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। तेल चित्रों और भित्ती चित्रों के अलावा उन्होनें कम्प्यूटर ग्राफिक्स में सृजन कार्य किया है। उनका चित्रण कार्य यूरोपीय पुनर्जागरण के कलाकारों की याद दिलाता है। वर्ष 2000 में अंजलि इला मेनन को भारत सरकार द्वारा पद्यश्री पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया एवं सन् 2018 में उन्हें मध्य प्रदेश सरकार द्वारा कालीदास सम्मान से सम्मानित किया गया।

अर्पणा कौर की कला में सामाजिकता:– भारतीय समकालीन कलाकार एवं ग्राफिक कलाकार के रुप में उभरी अर्पणा कौर का जन्म सन् 1954 में दिल्ली में हुआ था। वह एक सिख परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। उन्होंने चित्रकला में कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं लिया है, वह ज्यादातर स्वयं ही सीखती थीं। अर्पणा कौर का काम महिलाओं बुद्धिजीवियों और कलाकारों में उभरती उस चेतना का प्रतीक है जो न केवल अपने व्यक्तित्व को खोजना चाहती हैं और समाज के साथ नई तरह से जुड़ना चाहती हैं बल्कि कला में नई संवेदनाओं का विकास भी करना चाहती हैं। उनकी चित्र श्रृंखलाएं मुख्यतः स्त्रियों दशा एवं समाज में बढती हिंसा से सम्बन्धित रही हैं। उनकी कला में जीवन की सत्यता के दर्शन होते हैं। उन्होंने मानव के दैनिक जीवन से सम्बन्धित चित्रण को अपने अनुसार चित्रित किया है। अर्पणा के चित्र यथार्थ को प्रकट करते दिखाई पड़ते हैं। इसके अलावा उन्होंने सामाजिक एवं राजनीतिक पहलुओं का भी यथार्थ चित्रण किया है। अर्पणा की कला आज के मानव के दैनिक जीवन को चित्रित करती है। वह अपनी संरचनाओं का ढाँचा, पहाड़ी लघुचित्रों की कुछ विशेषताओं का प्रयोग करते हुए निर्मित करती हैं– गोलाई लिए आकृतियाँ, बंकिम क्षितिज, पृष्ठभूमि का आकाश, पृथ्वी तथा जल में विभाजन अर्पणा अपने चित्रों के विषय अपने आसपास होने वाली घटनाओं से लेती हैं। उनका ज्यादातर कार्य सामाजिक मुददो पर आधारित रहा है। उनके कार्य में परम्पराओं को स्पष्ट रुप से दर्शाया गया है। उनकी कला गोंड, मधुबनी लोक कला एवं पंजाबी साहित्य से प्रभावित रही है। अर्पणा की कला चित्रों के माध्यम से सत्य कहानियों को प्रर्दशित करती है। उन्होंने शहरी परिवेश में महिलाओं की दशा, हिंसा जीवन और मृत्यु को चित्रों के माध्यम से दर्शाया है। अर्पणा कौर ने देश–विदेशों बहुत सी एकल प्रदर्शनियों का आयोजन किया है, जो उनकी कला की यथार्थता को दर्शाता है।

उपसंहार एवं निष्कर्ष:–समकालीन कला के विकसित स्वरुप अमूर्त चित्रण को सृजित कर कलाकारों ने कला के क्षेत्र में नये आयाम प्रस्तुत किये हैं। समकालीन कला के अर्तंगत सामाजिक जन–जीवन के चित्रण का महत्वपूर्ण स्थान है। ज्यादातर कलाकार सामाजिक जन–जीवन का यथार्थ रुप तूलिका एवं रंगों के माध्यम से सृजित कर रहे हैं जिसमें समाज की सत्यता के दर्शन होते हैं। सामाजिक जन–जीवन के चित्रण के माध्यम से आज का कलाकार रोजमर्रा के कार्यों को, समाज में होने वाली हिंसा, समाज में नारी की स्थिति का वास्तविक चित्रण कर यथार्थता को रंगों द्वारा प्रकट कर रहा है। समकालीन कला में कलाकार अपनी स्वेच्छा से विषय का चयन कर उसको अपनी आत्मिक अभिव्यक्ति के माध्यम से दर्शा रहा है। युवा वर्ग कला के क्षेत्र में नवीन

प्रयोग कर निरन्तर कला के स्वरुप को बदल रहा है। आज के कलाकारों की नई सोच ने कला के नवीन रुप को विकसित कर समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1 साखलकर,र0 वि – आधुनिक चित्रकला का इतिहास, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 18 वॉ संस्करण – 2010 पृ0 स0 – 313

2 उपरिवत पृ0 – 314

3 उपरिवत – 318

4 प्रदीप, डा0 किरण– आकृति – 3 भारतीय आधुनिक कला, मेरठ, दिल्ली : कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लिमिटेड़, संस्करण, 2007, पृ0 स– 145

5 उपरिवत पृ0– 146

6 चतुर्वेदी, डा0 ममता – समकालीन भारतीय कला, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2022 , पृ0 सं0– 145

7 उपरिवत पृ0– 145

8 उपरिवत पृ0 – 163

9 अग्रवाल, डा0 गिर्राज किशोर– आधुनिक भारतीय चित्रकला, आगरः संजय पब्लिकेश सन्स, संस्करण (अलिखित), पृ0 सं0– 209

10 चतुर्वेदी, डा0 ममता– समकालीन भारतीय कला, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, संस्करण , 2022 , पृ0 सं0– 164

11 उपरिवत– 17012 उपरिवत– 170

13 मागो, प्राणनाथ– भारत की समकालीन कला – एक परिपेक्ष्य, नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इड़िया, संस्करण, 2006, पृ0स0– 179

14 उपरिवत– 180

15 भारद्वाज, विनोद– बृहद आधुनिक कला कोष वाणी, प्रकाशन; नई दिल्ली, संस्करण– प्रथम 2006 आवृत्ति संस्करण–2015, पृ0स0–79

16 रानी, डॉ0 अर्चना– भारतीय कला की विधियाँ एवं प्रविधियाँ, प्रकाशक; विजुअल आर्ट ड्रांइग एवं पेण्टिग विभाग (शोध केन्द्र मेरठ) पृ0स0–68

17 रानी, डॉ0 अर्चना– समकालीन कला, विविध परिदृश्य, मेरठ–2012, पृ0स0–102